

**डा0 श्रीकान्त चन्दोला, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून की अध्यक्षता में आयोजित उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद की बैठक दिनांक 27-08-2015 का कार्यवृत्त-**

दिनांक 27-08-2015 को शताब्दी भवन, उत्तराखण्ड हल्द्वानी में उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद (आर0ए0सी0) की बैठक **डा0 श्रीकान्त चन्दोला**, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में उपस्थित सदस्यों, उनके प्रतिनिधियों एवं विशेष आमंत्रियों की सूची संलग्न है।

**श्री बी0पी0 गुप्ता** मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी सदस्य/सचिव, आर0ए0सी0 द्वारा उपस्थित समस्त प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बैठक में अपना बहुमूल्य समय प्रदान करने हेतु आभार व्यक्त किया गया। उनके द्वारा अवगत कराया गया कि समिति की विगत बैठक दिनांक 30-04-2015 को हुई थी एवं विगत निर्णयों के आधार पर यथोचित प्रगति प्राप्त की गयी है तथा आशा व्यक्त की गयी कि वानिकी अनुसंधान कार्यों को दिशा एवं गति प्रदान करने हेतु सदस्यों के बहुमूल्य सुझावों का भविष्य में भी अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।

अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। **श्री प्रमोद कुमार भट्ट**, प्रभारी वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी द्वारा आर0ए0सी0 की पूर्व बैठकों क्रमशः दिनांक 27-08-2011, 04-08-2012, 20-04-2013, 16-05-2014 एवं 30-04-2015 में अनुमोदित परियोजनाओं जो वर्तमान में गतिमान है, की अद्यतन प्रगति रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण किया गया, जिसका विवरण निम्न प्रकार है -

**कैम्पा अन्तर्गत गतिमान परियोजनाएं -**

क्र०सं०	परियोजना	प्रगति विवरण
1	Collaborative Research (CAMPA)	<p><b>मीलिया कम्पोजिका का उपयुक्तता अध्ययन-धीमरी 19 एवं टाण्डा 20 (2011-12 से 2015-16)</b></p> <p>मिलिया कम्पोजिका (Melia composita) के उपयुक्तता अध्ययन हेतु टांडा 20 एवं धीमरी 19 में जुलाई, 2011 में 0.5 हे० क्षेत्र में स्थापित किया गया, जिसमें 21 प्रोजेनी के 525 पौध 3 मी० X 3 मी० दूरी पर लगाये गये। दिसम्बर, 2014 में लिए आकड़ों के अनुसार टाण्डा 20 में प्रोजेनी सं० 260 में वृद्धिदर (6.96 मी० औसत ऊँचाई एवं 7.9 सेमी० औसत व्यास) सबसे अच्छी पायी गयी। इसी प्रकार धीमरी 19 में प्रोजेनी सं० 240 में वृद्धिदर (12.0 मी० औसत ऊँचाई एवं 14.5 सेमी० औसत व्यास) सबसे अच्छे पाये गये।</p> <p><b>यूकेलिप्टस हाईब्रिड का उपयुक्तता ट्रायल- पीपल पड़ाव (2012-13 से 2016-17)</b></p> <p>क्षेत्रफल 0.4 हे०, प्लाट डिजाईन- R.B.D. उपचार-12 क्लोनों की संख्या 22, हाईब्रिड 12, रेप्लीकेशन 5, 20 पौध प्रति क्लोन प्रति रेप्लीकेशन माह फरवरी, 2013 में पीपलपड़ाव में रोपित की गयी है। अद्यतन मापन के अनुसार एफ०आर०आई० से प्राप्त क्लोन कोड सं० 33 (औसत ऊँचाई 6.50 मी० एवं औसत व्यास 5.7 सेमी०) एवं कोड सं० 35 (औसत ऊँचाई 6.56 मी० एवं औसत व्यास 5.0 सेमी०) में सर्वाधिक वृद्धिगति पायी गयी है।</p> <p><b>नर्सरी रोग एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित हस्त पुस्तिका का प्रकाशन</b></p> <p>एफ०आर०आई०, देहरादून को उपरोक्त पुस्तिका प्रकाशन हेतु रू० 1.50 लाख का भुगतान किया जा चुका है। माह सितम्बर, 2015 तक हस्त पुस्तिका प्राप्त होने की सम्भावना है।</p> <p><b>बांज वनों में बॉदा (Loranthus) के प्रभाव एवं नियन्त्रण का अध्ययन- नगर पालिका रेंज, कं०न० 18 एवं नैना रेंज, कं०न० 20 (2014-15 से 2018-19)</b></p> <p>क्षेत्रफल 1.0 हे०, 40 वृक्ष प्रति स्थल चयनित करने के पश्चात 4 उपचार माह अक्टूबर, 2014 में किये गये। दोनों प्रयोग स्थल प्रेक्षण (Observation) के अन्तर्गत है।</p>

		<p><b>मुनस्यारी, बडकोट एवं नैनीताल में रिंगाल के विकास एवं सतत उत्पादन के दृष्टि से विभिन्न दोहन तकनीक के प्रभाव का अध्ययन- (2014-15 से 2018-19)</b>  स्थल-मुनस्यारी एवं लीगाधार, खुर्पाताल कं0न0 3  दोहन का समय- माह फरवरी, 2015, दोहन का प्रकार- 4 एवं नियन्त्रित रेप्लीकेशन- 4, क्लम्पस् की सं0-20 क्लम्पस प्रति प्रजाति, प्रजाति की संख्या- 4 (Arundinaria falcata, A. falconerli, A. spathiflora, A. jaunsarensis)  <b>वरंगु (Caralia integerrima) प्रजाति संरक्षण एवं संवर्धन- रानीपुर रेंज 2014-15 से 2018-19)</b>  अनुसंधान रेंज, रानीपुर द्वारा देहरादून वन प्रभाग के लच्छीवाला कंक्ष सं0 13 में विद्यमान वरंगु के 4 वृक्षों का संरक्षण कार्य किया जा रहा है तथा उनसे प्राप्त बीजों से श्यामपुर पौधालय में 700 पौध तैयार की गयी है। देहरादून वन प्रभाग के गोलातप्पर 7बी0 वन ब्लॉक में 375 पौधों का रोपण किया गया है। संरक्षण कार्य हेतु स्थानीय लोगों में इस प्रजाति के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।</p>
2	<p>Demonstration plots and trials of need based initiatives (CAMPA)</p>	<p><b>अकेशिया मेन्जियम (Acacia mangium) का फील्ड ट्रायल- टाण्डा (2011-12 से 2015-16)</b>  0.6 हे0 क्षेत्र में अकेशिया मेन्जियम के 320 पौधों का रोपण धीमरी 19 में गम्हार (Gmelina arborea) एवं पाडल (Stereospermum suaveolens) के पौधों के साथ माह जुलाई, 2011 में किया गया। वर्तमान में अकेशिया मेन्जियम की कोई पौध जीवित नहीं है। अतः यह निष्कर्ष है कि इस क्षेत्र के लिए अकेशिया मेन्जियम उपयुक्त नहीं है।</p> <p><b>चम्पा (Michelia champaca) का प्रोवेनेन्स ट्रायल- टाण्डा (2011-12 से 2015-16)</b>  क्षेत्रफल 0.40 हे0, रोपित पौधों की संख्या 420, रोपण काल- माह जुलाई, 2011 माह दिसम्बर, 2014 के मापन के अनुसार औसत ऊँचाई 2.43 मी0 औसत व्यास 4.3 सेमी0 सफलता- शत् प्रतिशत।</p> <p><b>केदारपाती (Skimmia laureola) का फील्ड ट्रायल- देववन (2011-12 से 2015-16)</b>  क्षेत्रफल 1.0 हे0, रोपित पौधों की संख्या 10,000, रोपण काल- माह जुलाई, 2011 सफलता- शत् प्रतिशत। प्रति पौध शाखाओं की संख्या- 4 (आकड़ा माह जनवरी, 2015)।</p> <p><b>सेमलागम (Bauhinia semla) का प्रदर्शन क्षेत्र- गोमद बी0पी0, लोहाघाट (2011-12 से 2015-16)</b>  क्षेत्रफल 1.0 हे0, रोपित पौधों की संख्या 1100, सफलता प्रतिशत- 70 प्रतिशत। 790 ग्रा0 गोंद जुलाई से सितम्बर, 2014 के अवधि के दौरान 5 प्राकृतिक सेमला वृक्षों (गाजा) से प्राप्त किया गया।</p> <p><b>फाइकेटम की स्थापना- लालकुआँ (2012-13 से 2016-17)</b>  अनुसंधान पौधालय, लालकुआँ के अन्तर्गत 3.0 हे0 क्षेत्र में फाइकस के विभिन्न प्रजातियों का रोपण का कार्य वर्ष 2012 से प्रारम्भ किया गया है। वर्तमान तक कुल 87 विभिन्न फाइकस की प्रजातियों का रोपण किया जा चुका है। फाइकस की 100 प्रजातियों का रोपण करने का लक्ष्य है। इस फाइकेटम को सुदृढ करते हुए विश्व स्तरीय केन्द्र बनाने का संकल्प लिया गया।</p> <p><b>चूक (Hippophae salicifolia) का प्रदर्शन क्षेत्र- मुनस्यारी (2012-13 से 2016-17)</b>  माह जून, 2013 में 2 मी0 x 2 मी0 के अन्तराल पर 0.5 हे0 क्षेत्र में चूक के 1200 पौधों रोपण किया गया। वर्तमान में जीवितता 60 प्रतिशत है एवं औसत ऊँचाई 42.</p>

		<p>96 सेमी० है।</p> <p><b>पटवा (<i>Meizotropis pellita</i>) का प्रदर्शन क्षेत्र- सडियाताल (2012-13 से 2016-17)</b>      माह जुलाई, 2013 में 0.5 हे० क्षेत्र में 3 मी० x 3 मी० के अन्तराल पर 0.5 हे० क्षेत्र में पटवा के 500 पौधों रोपण किया गया। वर्तमान में सभी पौध जीवित है। यह प्रजाति पटवा डागर क्षेत्र के आस-पास ही पायी जाती है।</p> <p><b>मैदानी, मध्य हिमालयी एवं उच्च हिमालयी क्षेत्र हेतु झाड़ी प्रजातियों के ईधन प्रकाष्ट/ ऊर्जा उत्पादकता सम्बन्धी प्रयोग की स्थापना-लालकुआँ, गाजा एवं देववन (2013-14 से 2017-18)</b>      निम्न प्रकार चयनित प्रजातियों का रोपण प्रत्येक स्थल पर 0.25 हे० क्षेत्र में माह जुलाई, 2013 में किया गया।</p> <p><b>मैदानी क्षेत्र हेतु प्रजातियाँ-</b>      धौला (<i>Woodfordia fruticosa</i>), हरसिंगार (<i>Nyctanthes arbor-tristis</i>), रोहिणी (<i>Mallotus philipensis</i>), अग्निमंथा (<i>Premna latifolia</i>), मरोड़फली (<i>Helicteres isora</i>), झाऊ (<i>Tamarix dioca</i>)</p> <p><b>मध्य हिमालयी क्षेत्र हेतु प्रजातियाँ-</b>      किल्मोड़ा (<i>Berberis aristata</i>), धौला (<i>Woodfordia fruticosa</i>), मकौल (<i>Coriaria nepalensis</i>), रूईस (<i>Cotoneaster bacillaris</i>), चड़यूल (<i>Rhamnus virgata</i>)</p> <p><b>उच्च हिमालयी क्षेत्र हेतु प्रजातियाँ-</b>      घिंघारू (<i>Pyracantha crenulata</i>), किल्मोड़ा, (<i>Berberis aristata</i>), रूईस(<i>Cotoneaster bacillaris</i>), अमेश (<i>Hippophae salicifolia</i>), टकनोइ (<i>Lonicera quinquelocularis</i>) छोटी बसरोई (<i>Salix elegans</i>)</p> <p>उपरोक्त प्रजातियों के 400 सौ पौध प्रति प्रजाति क्रमशः लालकुआ, गाजा एवं देववन में माह जुलाई, 2013 में रोपित किया गया है। 3, 4 एवं 5 वें वर्ष 20 प्रतिशत पौधों का पातन कर हरा एवं सूखा भार ज्ञात कर उत्पादकता का अध्ययन किया जायेगा।</p> <p><b>सैलिक्स का उपयुक्तता ट्रायल- काकडीघाट (2013-14 से 2017-18)</b>      क्षेत्रफल 0.5 हे०, क्लोन जे-799, जे-795, जे-194, पीएन-722, एसआई०-63-007, 132/25 को वाई०के० परमार, विश्वविद्यालय, सोलन हि०प्र० से प्राप्त कर काकडीघाट में माह जनवरी, 2013 में स्थानीय सैलिक्स प्रजाति के साथ लगाया गया है।</p> <p><b>आर्थिक दृष्टि से उपयोगी वृक्ष, झाड़ी एवं घास द्वारा भूमि क्षरण के नियन्त्रण हेतु हरित आवरण तैयार करना- नैनीताल-खुर्पाताल मोटर मार्ग 200 मी० (2014-15 से 2018-19)</b>      कुल 9360 पौधों का रोपण माह जुलाई, 2014 में किया गया है। जीवितता शत प्रतिशत है।</p> <p><b>कऊ (<i>Olea cuspidata</i>) एवं रिकदालमी (<i>Myrsine africana</i>) का प्रदर्शन क्षेत्र- देव वन कं०नं० 6 चकराता (2014-15 से 2018-19)</b>      देव वन कं०नं० 6, चकराता में 1350 पौधों का माह जुलाई, 2014 में रोपण किया गया है। वर्तमान में जीवितता 81 प्रतिशत है।</p>
3	Establishment/ maintenance of seed plots/orchards (CAMPA)	<p><b>रूईस (<i>Cotoneaster bacillaris</i>) के बीज क्षेत्र की स्थापना- वनीगाँव, लोहाघाट (2011-12 से 2015-16)</b>      0.5 हे० क्षेत्र में 1250 पौधों का रोपण माह जुलाई, 2011 में किया गया। वर्तमान में जीवितता 90 प्रतिशत है तथा औसत ऊँचाई 43.48 सेमी० एवं अधिकतम ऊँचाई 150 सेमी० है। (आंकड़ा अप्रैल, 2015)</p> <p><b>यूकेलिप्टस सी०एस०ओ० की स्थापना- लालकुआँ (2011-12 से 2015-16)</b></p>

		<p>3.0 हे० क्षेत्र में यूकेलिप्टस के 20 क्लोन रोपित किये गये है जिनमें आई०टी०सी० के 07 एस०पी०एम० के 02, के० सीरीज के 04 ए०पी०-01, प्रगति बायोटेक- 04 एवं फुलबाग- 02। जीवितता 92 प्रतिशत, अधिकतम ऊँचाई 10.35 मी० एवं औसत ऊँचाई 9.9 मी० एस०पी०एम० के क्लोन में पायी गयी है।</p> <p><b>जैव विविधता की महत्वपूर्ण स्थानीय प्रजातियों का बीजूबीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना- लालकुआँ (2012-13 से 2016-17)</b></p> <p>3.2 हे० क्षेत्र में 6मी० X 6 मी० के अन्तराल पर 55 महत्वपूर्ण प्रजातियों का रोपण वर्ष 2012 से वर्तमान तक किया गया है।</p> <p><b>ईमरोई (<i>Ulmus wallichiana</i>) एवं गिनरोई (<i>Elaeagnus umbellata</i>) के बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना- खुर्पाताल कक्ष सं० 3, (2013-14 से 2017-18)</b></p> <p>0.25 हे० क्षेत्र में 160 पौध गिनरोई एवं 40 पौध ईमरोई के माह जुलाई, 2013 में रोपित किये गये एवं जीवितता शत प्रतिशत है। गिनरोई की औसत ऊँचाई 65 सेमी० एवं ईमरोई की औसत ऊँचाई 87 सेमी० है।</p> <p><b>बमौर (<i>Cornus capitata</i>) के बीज क्षेत्र की स्थापना- द्वारसौ (2013-14 से 2017-18)</b></p> <p>0.25 हे० क्षेत्र में बमौर के 200 पौधों का रोपण 2 मी० X 2 मी० के अन्तराल पर किया गया है। जीवितता 98 प्रतिशत है तथा औसत ऊँचाई 56 सेमी० है। (आकडा जनवरी, 2015)</p> <p><b>गैठी (<i>Boehmeria rugulosa</i>) के बीजू बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना- खुर्पाताल क०न० 3 (2013-14 से 2017-18)</b></p> <p>1.0 हे० क्षेत्र में गैठी के 500 पौधों का रोपण में जुलाई, 2014 में किया गया। जीवितता शत प्रतिशत है तथा औसत ऊँचाई 25.48 सेमी० है तथा अधिकतम ऊँचाई 61 सेमी० है।</p>																																
4	Development of nursery techniques for propagation of indigenous species (CAMPA)	<p><b>महत्वपूर्ण प्रजातियों के नर्सरी तकनीक के मानकीकरण सम्बन्धी प्रयोग की स्थापना की गयी है। अब तक प्राप्त श्रेष्ठ परिणाम निम्न प्रकार है-</b></p> <table border="1" data-bbox="614 1254 1524 2027"> <thead> <tr> <th>क्र० सं०</th> <th>प्रजाति</th> <th>वर्धी प्रवर्धन का परिणाम</th> <th>बीज अंकुरण का परिणाम</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>1.</td> <td>कऊ (<i>Olea cuspidata</i>) (2013-14 से 2015-16) लोहाघाट एवं कालसी</td> <td>प्रस्फुटन- 63 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 85 प्रतिशत।</td> </tr> <tr> <td>2.</td> <td>तानसेन (<i>Tsuga dumosa</i>) (2013-14 से 2015-16) कालिका</td> <td>प्रस्फुटन- 17 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 66 प्रतिशत</td> </tr> <tr> <td>3.</td> <td>रिंकदालमी (<i>Myrsine africana</i>) (2013-14 से 2015-16) देववन</td> <td>प्रस्फुटन- 67 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 10 प्रतिशत</td> </tr> <tr> <td>4.</td> <td>फल्दू (<i>Mitragyna parvifolia</i>) (2013-14 से 2015-16) लालकुआँ</td> <td>प्रस्फुटन- 90 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 55 प्रतिशत</td> </tr> <tr> <td>5.</td> <td>खरपट (<i>Garuga pinnata</i>) (2013-14 से 2015-16) हल्द्वानी</td> <td>प्रस्फुटन- 40 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 80 प्रतिशत</td> </tr> <tr> <td>6.</td> <td>धौड़ी (<i>Lagerstromia parviflora</i>) (2014-15 से 2016-17) हल्द्वानी</td> <td>प्रस्फुटन- 65 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 21 प्रतिशत</td> </tr> <tr> <td>7.</td> <td>गेठी / हाथीपांव (<i>Indoptadenia audhensis</i>) (2014-15 से 2016-17) गाजा नर्सरी</td> <td>प्रस्फुटन- 35 प्रतिशत</td> <td>अंकुरण- 99.33 प्रतिशत</td> </tr> </tbody> </table>	क्र० सं०	प्रजाति	वर्धी प्रवर्धन का परिणाम	बीज अंकुरण का परिणाम	1.	कऊ ( <i>Olea cuspidata</i> ) (2013-14 से 2015-16) लोहाघाट एवं कालसी	प्रस्फुटन- 63 प्रतिशत	अंकुरण- 85 प्रतिशत।	2.	तानसेन ( <i>Tsuga dumosa</i> ) (2013-14 से 2015-16) कालिका	प्रस्फुटन- 17 प्रतिशत	अंकुरण- 66 प्रतिशत	3.	रिंकदालमी ( <i>Myrsine africana</i> ) (2013-14 से 2015-16) देववन	प्रस्फुटन- 67 प्रतिशत	अंकुरण- 10 प्रतिशत	4.	फल्दू ( <i>Mitragyna parvifolia</i> ) (2013-14 से 2015-16) लालकुआँ	प्रस्फुटन- 90 प्रतिशत	अंकुरण- 55 प्रतिशत	5.	खरपट ( <i>Garuga pinnata</i> ) (2013-14 से 2015-16) हल्द्वानी	प्रस्फुटन- 40 प्रतिशत	अंकुरण- 80 प्रतिशत	6.	धौड़ी ( <i>Lagerstromia parviflora</i> ) (2014-15 से 2016-17) हल्द्वानी	प्रस्फुटन- 65 प्रतिशत	अंकुरण- 21 प्रतिशत	7.	गेठी / हाथीपांव ( <i>Indoptadenia audhensis</i> ) (2014-15 से 2016-17) गाजा नर्सरी	प्रस्फुटन- 35 प्रतिशत	अंकुरण- 99.33 प्रतिशत
क्र० सं०	प्रजाति	वर्धी प्रवर्धन का परिणाम	बीज अंकुरण का परिणाम																															
1.	कऊ ( <i>Olea cuspidata</i> ) (2013-14 से 2015-16) लोहाघाट एवं कालसी	प्रस्फुटन- 63 प्रतिशत	अंकुरण- 85 प्रतिशत।																															
2.	तानसेन ( <i>Tsuga dumosa</i> ) (2013-14 से 2015-16) कालिका	प्रस्फुटन- 17 प्रतिशत	अंकुरण- 66 प्रतिशत																															
3.	रिंकदालमी ( <i>Myrsine africana</i> ) (2013-14 से 2015-16) देववन	प्रस्फुटन- 67 प्रतिशत	अंकुरण- 10 प्रतिशत																															
4.	फल्दू ( <i>Mitragyna parvifolia</i> ) (2013-14 से 2015-16) लालकुआँ	प्रस्फुटन- 90 प्रतिशत	अंकुरण- 55 प्रतिशत																															
5.	खरपट ( <i>Garuga pinnata</i> ) (2013-14 से 2015-16) हल्द्वानी	प्रस्फुटन- 40 प्रतिशत	अंकुरण- 80 प्रतिशत																															
6.	धौड़ी ( <i>Lagerstromia parviflora</i> ) (2014-15 से 2016-17) हल्द्वानी	प्रस्फुटन- 65 प्रतिशत	अंकुरण- 21 प्रतिशत																															
7.	गेठी / हाथीपांव ( <i>Indoptadenia audhensis</i> ) (2014-15 से 2016-17) गाजा नर्सरी	प्रस्फुटन- 35 प्रतिशत	अंकुरण- 99.33 प्रतिशत																															



		<p>8. तुंगला (<i>Rhus parviflora</i>) (2014-15 से 2016-17) सड़ियाताल</p> <p>9. जुनीपेरस (<i>J. squamata</i>) (2014-15 से 2016-17) पातालतोड़</p> <p>10. ट्री फर्न (<i>Cyathea spinulosa</i>) (2014-15 से 2016-17) द्वारसौ एवं मण्डल नर्सरी।</p> <p>11. वनपलास (<i>Schrebera swietenoides</i>) (2014-15 से 2016-17) लालकुआँ</p>	<p>प्रस्फुटन- 35 प्रतिशत</p> <p>प्रस्फुटन- 02 प्रतिशत</p> <p>माह सितम्बर, 2014 में एवं मार्च, 2015 में स्पोर का एकत्रीकरण किया गया था। कोई स्पोर अंकुरण नहीं पाया गया जबकि प्राकृतिक स्थल पर 40 पौधों में स्पोर अंकुरण पाया गया।</p> <p>प्रस्फुटन- 00 प्रतिशत</p>	<p>अंकुरण- 45 प्रतिशत</p> <p>अंकुरण- 45 प्रतिशत</p> <p>-</p> <p>अंकुरण- 76.6 प्रतिशत</p>
		<p>इसके अतिरिक्त वन वर्धनिक, साल क्षेत्र द्वारा हल्दू, धौड़ी, सांदन, चम्पा एवं वन वर्धनिक, पर्वतीय द्वारा काफल, बुरांश, तेजपात, थुनेर, धिंधारू, रुईस, भेकल, पटवा, केदारपाती के नर्सरी तकनीक पर ब्रोशर प्रकाशित किये गये।</p>		
5	Modern Seed Storage facility and strengthening of existing nurseries (CAMPA)	<p>बीज रेंज, साल क्षेत्र, हल्द्वानी में नये सीड स्टोर का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है किन्तु बजट स्वीकृत नहीं हुआ है। गत वर्ष उगाये गये पौधों का रख-रखाव कार्य किय जा रहा है।</p>		
6	Strengthening of Research cell by hiring technical personnels and upgradation of laboratory including training and workshop. (CAMPA)	<p><b>मृदा परीक्षण प्रयोगशाला -</b>  अनुसंधान शाखा के अन्तर्गत मृदा परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की गयी है जिसमें क्षेत्रीय वन प्रभागों एवं कार्य योजना प्रभागों से प्राप्त मृदा नमूनों का परीक्षण कर परीक्षण रिपोर्ट दी जाती है। अनुसंधान शाखा में प्रयोग की स्थापना से पूर्व मृदा नमूनों का परीक्षण इस प्रयोगशाला में किया जाता है।</p> <p><b>कार्यशाला -</b>  20 मई, 2015 को लालकुआँ में "गंगा एक्शन प्लान में वन विभाग की भूमिका" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इसी तरह वन वर्धनिक, पर्वतीय द्वारा बड़कोट में रिंगाल पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।</p> <p><b>अध्ययन भ्रमण एवं रोपण सामग्री का एकत्रीकरण -</b>  1- वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड के अधिकारी/ कर्मचारियों द्वारा काफल (<i>Myrica sapida</i>) एवं तेजपात के पौधों के एकत्रीकरण हेतु K.F.R.I. Pallod (Kerala) एवं शिलांग (मेघालय) का भ्रमण किया गया।  2- वन वर्धनिक, साल क्षेत्र, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी के अधिकारियों द्वारा फाइक्स के विभिन्न प्रजातियों के रोपण सामग्री के एकत्रीकरण हेतु माह अप्रैल, 2015 में उत्तरी-पूर्वी राज्यों का भ्रमण किया गया है।  3- दिनांक 30.04.2015 को एफ0आर0आई0 देहरादून में आर0ए0सी0 का आयोजन किया गया।</p>		
7	Publication of ARR, Research bulletins, etc (CAMPA)	<p><b>वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट का प्रकाशन-</b>  इस अवधि में प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों एवं अनुसंधान पत्रकों के सम्बन्ध में समिति को अवगत कराया गया। वर्ष 2013-14 का वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट प्रकाशित की गयी एवं वर्ष 2014-15 का वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट शीघ्र प्रकाशित की जायेगी।</p>		

8	Strengthening of existing botanical/herbal garden (CAMPA)	<p><b>दशमूल गार्डन का अनुरक्षण— लालकुआँ (2011-12 से 2012-13)</b> अनुरक्षण का कार्य किया जा रहा है।</p> <p><b>औषधीय प्रदर्शन क्षेत्र का अनुरक्षण— हल्द्वानी (2010-11 से 2013-14)</b> अनुरक्षण का कार्य किया जा रहा है।</p> <p><b>मुनस्यारी हर्बल गार्डन का अनुरक्षण— (2010-11 से 2013-14)</b> अनुरक्षण का कार्य किया जा रहा है।</p> <p><b>मुनस्यारी हर्बल गार्डन में बुरांश उद्यान की स्थापना – (2014-15 से 2016-17)</b> मुनस्यारी हर्बल गार्डन के 1.0 हे० क्षेत्र में जुलाई, 2014 में बुरांश के 480 पौध रोपित किये गये। वर्तमान में जीवितता शत प्रतिशत है।</p> <p><b>ताकील (<i>Trachycarpus takil</i>) का बाह्य स्थल (ex-situ) संरक्षण – (2014-15 से 2016-17)</b> माह जुलाई, 2014 में मुनस्यारी हर्बल गार्डन के 1.0 हे० क्षेत्र में ताकील के 600 पौधों का रोपण किया गया है। वर्तमान में जीवितता 80 प्रतिशत है।</p> <p><b>लतापरगोला – हल्द्वानी</b> हल्द्वानी अनुसंधान पौधालय में स्थापित विभिन्न लता प्रजातियों का रोपण लतापरगोला में किया गया है जिसका अनुरक्षण किया जा रहा है।</p>
9	Research & Technology Scheme (R.T.)	<p><b>यूकेलिप्टस के नये क्लोनों का विकास</b> यूकेलिप्टस तराई एवं भाबर क्षेत्र की मुख्य प्रजाति है। माह जुलाई, 2010 में तराई केन्द्रीय वन प्रभाग के अंतर्गत क्लोनल वृक्षारोपणों में विभिन्न क्लोनों के 75 सी०पी०टी० का चयन कर बीज एकत्रीकरण कार्य किया गया। माह फरवरी, 2011 में उपरोक्त सी०पी०टी० से प्राप्त बीज की बुआई कर 20952 पौधें तैयार किये गये तथा रोग प्रतिरोधी 412 पौधे चयनित कर जुलाई, 2012 में वन अनुसंधान केन्द्र, लालकुआँ में नये क्लोन चयनित करने की दृष्टि से ब्लॉक रोपण किया गया। इन पौधों की वृद्धि दर व फिनोलोजिकल गुणों के अध्ययन के आधार पर 4 नये क्लोन विकसित कर लिये गये हैं, जिनसे प्रवर्धन का कार्य किया जा रहा है तथा वर्ष 2014-15 में फील्ड ट्रायल स्थापित किया गया।</p> <p><b>पॉपलर के नये क्लोनों का विकास</b> माह जनवरी, 2011 में उक्त ट्रायल के अतिरिक्त 0.94 हे० क्षेत्र में 4m x 3m स्पेसिंग पर 78 क्लोनों का जर्मप्लाज्म बैंक भी स्थापित किया गया है। माह दिसम्बर, 2013 में मापन के आधार पर उक्त रोपित क्लोनों में से L-75/84, L-25/06 एवं L-05/05 की वृद्धिगति अभी तक सर्वाधिक पायी गयी है। फील्ड ट्रायल 2011 के प्रारम्भिक परिणामों के आधार पर वर्ष 2005 के 9 में से 4 क्लोनों, वर्ष 2006 के 8 क्लोनों में से 7 एवं वर्ष 2007 में नियमित एवं खुले परागण विधि द्वारा विकसित 40 क्लोनों में से 10 क्लोनों अर्थात् कुल 21 क्लोनों का फील्ड ट्रायल स्थापित किया गया।</p> <p><b>पुष्करमूल (<i>Inula racemosa</i>) के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना— मुनस्यारी (2011-12 से 2015-16)</b> 1- 0.5 हे० क्षेत्र में माह जुलाई, 2011 में 5000 पौधों का 1 मी० X 1 मी० के अन्तराल पर रोपण किया गया। 2- माह सितम्बर, 2013 में 5 पौधों से मूल का एकत्रीकरण कर मापन किया गया। ग्रीन बायोमास औसत 24 ग्रा० प्रति पौध मूल तथा सूखने के पश्चात् 5.24 ग्रा० प्रति पौध मूल पाया गया।</p> <p><b>लटुआ बांज (<i>Quercus lanuginosa</i>) के संरक्षण क्षेत्र की स्थापना— बिल्सर (2011-12 से 2015-16)</b> 0.5 हे० क्षेत्र में तार-बाड़ कर सुरक्षा की गयी तथा क्षेत्र को आग एवं लौपिंग से बचाया गया। क्षेत्र में मार्च, 2012 से निश्चित समय अन्तराल पर पुनरूत्पादन सर्वे का कार्य किया जा रहा है। अभी तक नये लटुआ बांज के 145 नये पौधे क्षेत्र में मिले, जो प्राकृतिक रूप से उगे हैं।</p>

		<p><b>रुद्राक्ष (<i>Eleocarpus ganitrus</i>) के V.M.G. की स्थापना- हल्द्वानी (2012-13 से 2015-16)</b> हल्द्वानी अनुसंधान पौधशाला के 0.7 हे० क्षेत्र में माह जुलाई, 2012 में रुद्राक्ष के 110 पौधों का रोपण कर V.M.G. की स्थापना की गयी। एफ०आर०आई० द्वारा विकसित लेयरिंग तकनीक के प्रयोग से अब तक 500 रुद्राक्ष की पौध तैयार की गयी है।</p> <p><b>पॉपुलेटम की स्थापना- लालकुआँ (2015-16 से 2019-20)</b> 22 क्लोन (8 नर, 14 मादा) के 584 ई०टी०पी० को माह जनवरी, 2015 में 1.0 हे० क्षेत्र में रोपित कर पॉपुलर जर्मप्लाज्म की स्थापना की गयी।</p> <p><b>आदर्श गाटा, रेखीय वृद्धि गाटा, सतत तालिका गाटा एवं वृक्ष वृद्धि गाटा -</b> सांख्यिकीय रेंज द्वारा वर्ष 2014-15 में निर्धारित सभी गाटाओं का मापन कार्य किया गया।</p>
<b>कैम्पा अन्तर्गत नई परियोजनाएँ-</b>		
क्र०सं०	परियोजना	प्रगति विवरण
1	Collaborative Research (CAMPA)	<p><b>आई०एफ०जी०टी०बी० से प्राप्त नये क्लोन का फील्ड ट्रायल-</b> अनुसंधान रेंज, हल्द्वानी द्वारा चकफेरी वन ब्लाक में 1.0 हे० क्षेत्र में नये यूकेलिप्टस हाईब्रिड क्लोन के फील्ड ट्रायल की स्थापना माह जुलाई, 2015 में की गयी, जिसमें I.F.G.T.B, कोयम्बटूर से प्राप्त 4 नये क्लोन C1, C2, C3 एवं C4 तथा स्थानीय 11 क्लोन एवं कन्ट्रोल के रूप में सीडलिंग पौध के कुल 1600 पौधों का रोपण किया गया है।</p> <p><b>बांज वनों में कार्बन संचयन का अध्ययन, नैनीताल वन प्रभाग-</b> बांज वनों में कार्बन संचयन सम्बन्धी अध्ययन का कार्य सिडार स्वयं सेवी संस्था के साथ माह नवम्बर, 2015 से शुरू किया जायेगा।</p>
2	Demonstration plots and trials of need based initiatives (CAMPA)	<p><b>वन पलास (<i>Schrebera sweitenoides</i>) के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना- (2015-16 से 2019-20)</b> वन पलास के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनुसंधान रेंज, हल्द्वानी के नर्सरी के समीप 1.4 हे० क्षेत्र में वन पलास (<i>Schrebera sweitenoides</i>) के 700 पौध एवं सहयोगी प्रजाति के 400 पौधों का रोपण जुलाई, 2015 में किया गया है।</p> <p><b>अन्य राज्यों के 20 RET औषधीय वृक्ष एवं झाड़ी प्रजाति के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना- (2015-16 से 2019-20)</b> विभिन्न राज्यों से एकत्र कर 20 RET से सम्बन्धित औषधीय पौधों का रोपण अनुसंधान पौधशाला लालकुआँ में किया जाना प्रस्तावित है, जिसमें से 10 प्रजातियों का रोपण माह जुलाई, 2015 में किया जा चुका है।</p> <p><b>भोजपत्र (<i>Betula utilis</i>) के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना- (2015-16 से 2019-20)</b> माह जुलाई, 2015 में मुनस्यारी स्थिति खुलिया कक्ष नं० 3 में 0.5 हे० क्षेत्र में 500 भोजपत्र (<i>Betula utilis</i>) के पौधों का रोपण कर प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना की गयी।</p> <p><b>गेठी/हाथीपॉव (<i>Indoptadenia audhensis</i>) के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना- (2015-16 से 2019-20)</b> अनुसंधान रेंज गाजा द्वारा ज्योलिकोट में 0.75 हे० में 750 पौध गेठी/हाथीपॉव (<i>Indoptadenia audhensis</i>) का रोपण माह जुलाई, 2015 में किया गया है।</p> <p><b>उत्तर पूर्व राज्यों से लाये गये काफल (<i>Myrica sapida</i>) के प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना- (2015-16 से 2019-20)</b> उत्तर पूर्वी राज्यों से काफल (<i>Myrica sapida</i>) के पौधों को एकत्रित कर अनुसंधान रेंज, कालिका में सुरक्षित रखा गया है जिनका रोपण अगले वर्षाकाल में किया जायेगा।</p> <p><b>सैलिक्स क्लोन का उपयुक्तता ट्रायल - (2015-16 से 2019-20)</b> अनुसंधान रेंज, गोपेश्वर द्वारा वाई०के० परमार विश्वविद्यालय, सोलन से सैलिक्स</p>

		की 5 क्लोनों के 750 पौध प्राप्त कर माह जनवरी, 2016 में छत्रपाल वन पंचायत, चमोली में रोपण किया जायेगा।
3	Establishment/maintenance of seed plots/orchards (CAMPA)	<p><b>श्यामपुर नर्सरी में शालमिश्री (<i>Edulophia dabia</i>) के बीज क्षेत्र की स्थापना— (2015-16 से 2019-20)</b>  अनुसंधान रेंज, रानीपुर द्वारा श्यामपुर पौधालय शालम मिश्री (<i>Edulophia dabia</i>) के बीज गाटा की स्थापना का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।</p> <p><b>दक्षिण भारतीय तेजपात के बीज उद्यान की स्थापना— (2015-16 से 2019-20)</b>  अनुसंधान रेंज, गाजा द्वारा माह जुलाई, 2015 में भुजियाघाट में K.F.R.I. से प्राप्त किये गये तेजपात पौधों का रोपण किया गया। बीज रेंज, साल क्षेत्र, हल्द्वानी द्वारा 20 बीज गाटाओं का रख-रखाव का कार्य माह अक्टूबर, 2015 से शुरू किया जाएगा।</p>
4	Development of nursery techniques for propagation of indigenous species (CAMPA)	<p><b><i>Ermostachys superba</i> के नर्सरी तकनीक सम्बन्धी प्रयोग की स्थापना— (2015-16 से 2017-18)</b>  अनुसंधान रेंज, हल्द्वानी में <i>Ermostachys superba</i> के नर्सरी तकनीक के मानकीकरण प्रयोग की स्थापना माह सितम्बर/अक्टूबर, 2015 में किया जाना प्रस्तावित है।</p> <p><b>अग्नि/तुमड़ी (<i>Pittosporum eriocarpum</i>) के नर्सरी तकनीक सम्बन्धी प्रयोग की स्थापना—(2015-16 से 2017-18)</b>  अनुसंधान रेंज, गाजा द्वारा अग्नि/तुमड़ी (<i>Pittosporum eriocarpum</i>) के नर्सरी तकनीक के मानकीकरण हेतु प्रयोग की स्थापना कर दी गयी है जिसके अन्तर्गत बीज बुआई एवं वर्धी प्रवर्धन का कार्य किया गया है।</p>
5	Modern Seed Storage facility and strengthening of existing nurseries (CAMPA)	<p><b>अतिरिक्त बीज गोदाम का निर्माण—</b>  बीज रेंज, साल क्षेत्र, हल्द्वानी में नये सीड स्टोर का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है, किन्तु बजट स्वीकृत नहीं हुआ है।</p> <p><b>50,000 पौधों का रख-रखाव—</b>  बीज रेंज, साल क्षेत्र, हल्द्वानी में विगत वर्ष उगाये गये पौधों का रख-रखाव कार्य किया जा रहा है।</p> <p><b>बजट के अभाव में निम्न कार्य शुरू नहीं किये गये हैं—</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>1- 50,000 गुणवत्तायुक्त पौध उगाने का कार्य।</li> <li>2- लालकुओं में 125 मी० सुरक्षा दीवाल के निर्माण सम्बन्धी कार्य।</li> <li>3- ट्यूबवेल रूम एवं वर्किंग शेड के निर्माण का कार्य।</li> <li>4- अनुसंधान रेंज, हल्द्वानी के नर्सरी में जन सुविधाओं के स्थापना का कार्य तथा इसी नर्सरी के निरीक्षण पथ के निर्माण का कार्य।</li> <li>5- श्यामपुर नर्सरी में मिस्ट चैम्बर के मरम्मत का कार्य।</li> </ol>
6	Strengthening of Research cell by hiring technical personnels and upgradation of laboratory including training and workshop. (CAMPA)	इस शीर्षक के अन्तर्गत कार्यशाला का आयोजन, आर०ए०सी० का आयोजन विभिन्न संस्थाओं से रोपण सामग्री का एकत्रीकरण प्रशिक्षण, सेमीनार आदि के लिए प्रस्ताव किया गया है। कार्य पूर्व में ही पूर्ण किये गये हैं, किन्तु बजट के कमी के कारण भुगतान नहीं हो पा रहा है तथा भविष्य में नये कार्य करना सम्भव नहीं होगा।
7	Publication of ARR, Research bulletins, etc (CAMPA)	<p><b>वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट का प्रकाशन—</b>  अनुसंधान समाचार पत्रक का प्रकाशन किया गया। वर्ष 2014-15 का वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट एवं विभिन्न प्रजातियों नर्सरी तकनीक से सम्बन्धित ब्रोशर का प्रकाशन किया जायेगा।</p>
8	Research & Technology Scheme (R.T.)	<p><b>यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के नये क्लोनों का विकास</b>  अनुसंधान रेंज, लालकुओं में पॉपलर एवं यूकेलिप्टस के नये क्लोनों के विकास सम्बन्धी कार्य किये जा रहे हैं। गतवर्षों से चल रहे प्रयोगों के प्रबन्धन एवं अनुरक्षण का कार्य किया जा रहा है।</p>



प्रभारी वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी द्वारा कैम्पा तथा आर0टी0 योजना के अन्तर्गत नये प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये तथा समिति द्वारा विस्तृत एवं सम्यक विचारोपरान्त निम्न प्रकार निर्णय/सुझाव दिये गये :-

### New CAMPA Scheme

क्र0सं0	परियोजना का नाम	समिति का निर्णय/सुझाव
<b>Collaborative Research (1a) for preparation of volume table, climate change studies, hydrological investigation, development of urban forestry models, stake holders survey on forestry issues, forest certification, inventorization of vegetation, etc.</b>		
1	Upscaling Research on Assessment of Productivity, Hydrological Behaviour, Resource Conservation and Intangible Benefits of Selected Commercial Bamboo species in Uttarakhand	समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान किया गया। समिति के अध्यक्ष महोदय द्वारा सुझाव दिया गया कि विदेशज बांस प्रजाति को प्रोजेक्ट से बाहर रखा जाय तथा स्थानीय बांस (डेन्ड्रोक्लेमस स्टेक्टिस) पर विशेष जोर दिया गया। प्रोजेक्ट समाप्त होने पर प्राप्त परिणाम से विभाग को अवगत कराया जाय।
2	Comparative Study between traditional volume table of <i>Acacia catechu</i> used by Forest Corporation Uttarakhand and current productivity of <i>Acacia catechu</i> in Forest.	समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान करते हुए सुझाव दिया गया कि इसका वित्त पोषण उत्तराखण्ड वन विकास निगम से किया जाय। उत्तराखण्ड वन विकास निगम के प्रतिनिधि द्वारा इस पर सहमति व्यक्त की गयी।
<b>Demonstration plots and trials of need based initiatives (1b)</b>		
1	To create vegetation cover on the road cutting sites of Hill areas of Uttarakhand.	समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान किया गया।
<b>Modern seed storage facility for important species and strengthening of existing nurseries (1e)</b>		
1	Fencing of Shyampur Nursery with Thorny Bamboos and Barbed wire	समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान किया गया।
<b>Strengthening of Research Cell by hiring of technical personnel &amp; up gradation of laboratory (1g)</b>		
1	Hiring of technical personnel in research projects/ activities (Silva, Sal Region)	समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान करते हुए सुझाव दिया गया कि <b>D.S.T.</b> एवं <b>U.G.C</b> द्वारा जारी किये गये अद्यतन आदेशों के अनुरूप ही योग्यता एवं <b>Emoluments</b> का निर्धारण किया जाय।
2	Requirement of of scientists / technical personnel	समिति द्वारा अनुमोदन प्रदान करते हुए सुझाव दिया गया कि आवश्यकतानुसार ही उपयुक्त पदों पर बाह्य सोर्स से सेवा प्राप्त की जाय।



## समिति द्वारा दिये गये विशेष सुझाव/निर्णय -

- 1. अनुसंधान कार्यों हेतु प्रस्तावित बजट में कमी-** मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी द्वारा समिति को अवगत कराया गया कि दिनांक 30.04.2015 को आर0ए0सी0 द्वारा अनुमोदित योजनाओं के लिए प्रस्तावित बजट रू0 158.59 लाख के सापेक्ष कैम्पा द्वारा मात्र रू0 97.26 लाख का बजट स्वीकृत किया गया। इस प्रकार कैम्पा योजना अन्तर्गत प्राप्त होने वाले बजट में रू0 69.11 लाख की कटौती की गयी, जिसके कारण कई योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका है तथा कुछ ऐसी योजनाएँ हैं जिनके कार्य पूर्ण कर दिये गये हैं, किन्तु बजट में कटौती के कारण भुगतान नहीं हो पा रहा है। समिति द्वारा सुझाव दिया गया कि अनुसंधान शाखा का बजट बहुत कम होता है, इसमें कटौती करने से अनुसंधान कार्यों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। श्री आई0डी0 पाण्डे, सेवानिवृत्त, वनाधिकारी द्वारा सुझाव दिया गया कि अनुसंधान कार्यों हेतु विभागीय बजट का न्यूनतम 1 प्रतिशत धनराशि आबंटित किया जाना चाहिए। कैम्पा योजना से अनुसंधान कार्यों हेतु अधिक से अधिक बजट उपलब्ध कराया जाना चाहिए। श्री जय राज, प्रमुख वन संरक्षक, अनुसंधान प्रशिक्षण एवं प्रबन्धन द्वारा अनुसंधान शाखा को पर्याप्त बजट प्रदान करने हेतु समिति के अध्यक्ष डा0 श्रीकान्त चन्दोला, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड से अनुरोध किया गया। डा0 श्रीकान्त चन्दोला, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड द्वारा सुझाव दिया गया कि प्राप्त बजट में प्रार्थमिकता तय करते हुए प्रयोग/कार्यों को पूर्ण करें। जो कार्य बजट के अभाव में शुरू नहीं हो पा रहे हैं, उनके लिए उत्तराखण्ड वन विकास निगम को बजट प्राप्त करने हेतु योजना प्रस्तुत करें।
- 2. डा0 जे0एस0 मेहता,** सेवानिवृत्त, वनाधिकारी ने सुझाव दिया कि वन वर्धनिक, पर्वतीय द्वारा लटुआ बांज प्रजाति के विभिन्न स्थानों (1000 मी0 से 2000 मी0 तक ऊँचाई) से बीज एकत्र कर प्रोविनेन्स ट्रायल की स्थापना की जाय। गढवाल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा0 एस0पी0 सिंह ने लटुआ बांज के बारे में विस्तार से चर्चा कर कहा कि इस पर वन विभाग से अच्छा कार्य कोई नहीं कर सकता है। जी0बी पन्त हिमालयन संस्थान कोसी कटारमल, अल्मोड़ा के डा0 एस0के0 नन्दी ने बाँज प्रजाति पर संस्थान द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख किया एवं बाँज की पौध उगाने सम्बन्धी जानकारी दी गई। समिति द्वारा इस सुझाव पर सहमति व्यक्त की गयी एवं आगामी बैठक में एक योजना प्रस्तुत करने हेतु निर्देश दिये गये।
- 3. डा0 जे0एस0 मेहता,** सेवानिवृत्त, वनाधिकारी ने पर्वतीय क्षेत्रों में विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध बांस की बेडियों से राईजोम एकत्र कर किसी एक स्थान पर राईजोम बैंक स्थापित करने का सुझाव दिया गया, जिस पर समिति द्वारा सहमति व्यक्त की गयी एवं आगामी बैठक में एक योजना प्रस्तुत करने हेतु निर्देश दिये गये।
- 4. श्री आई0डी0पाण्डे,** सेवानिवृत्त वनाधिकारी ने कहा कि अनुसंधान कार्यों के लिए हम विभिन्न संस्थाओं का सहयोग ले सकते हैं और सांख्यिकीय रेंज से सम्बन्धित महत्वपूर्ण आकड़ों का विश्लेषण अन्य संस्थाओं से करा सकते हैं। हमें सोचना होगा कि हम अपनी उत्पादकता को वन पंचायतों और पर्यावरण से कैसे जोड़ सकते हैं। अनुसंधान के परिणाम जन साधारण को उपलब्ध कराये जाने चाहिए। अवगत कराया गया कि अनुसंधान शाखा द्वारा काफी संख्या में आदर्श गाटा(SP), वृक्ष वृद्धि गाटा(TIP), रेखीय वृद्धि गाटा(LIP), सतत् तालिका गाटा(CIP), परीक्षण गाटा(PP), संरक्षण गाटा(CP) आदि प्रायोगिक गाटाएँ लम्बे समय से स्थापित किये गये हैं तथा उनके सांख्यिकीय आकड़ें भी उपलब्ध हैं, परन्तु इन आकड़ों का विश्लेषण कर नतीजे हासिल नहीं किये गये हैं। कई ऐसे पुराने गाटाएँ भी हैं, जिनके प्रयोग समाप्त हो चुके हैं। इन्हें अधिकारिक रूप से बंद कर सम्बन्धित क्षेत्रीय प्रभाग को वापस किये जाने की आवश्यकता है। समिति द्वारा सुझाव दिया कि इन गाटाओं के आकड़ों का विश्लेषण अन्य संस्थाओं जैसे एफ0आर0आई0 से कराया जाय तथा ऐसे पुराने गाटे जिनमें प्रयोग बंद किया जा चुका है, को क्षेत्रीय प्रभागों को वापस कर दिया जाय।

5. वन अनुसंधान, हल्द्वानी द्वारा कासनी वनस्पति (Cichorium intybus) के विस्तृत प्रचार और उत्पादन की काफी प्रशंसा की गयी। कासनी के औषधीय गुणों के व्यापक प्रचार-प्रसार कर जनसेवार्थ के लिए उपलब्ध कराने का कार्य करने वाले श्री मदन सिंह बिष्ट, प्रभारी वन क्षेत्राधिकारी, अनुसंधान रेंज, हल्द्वानी को विभाग द्वारा उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित किये जाने की बात कही गयी, जिसका समर्थन आर०ए०सी० के सभी सदस्यों द्वारा किया गया एवं डा० श्रीकान्त चन्दोला, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड द्वारा भी श्री बिष्ट के कार्यों को सराहा गया तथा समय पर यथोचित पुरस्कार देने की घोषणा की गयी।
6. डा०एस०पी० सिंह, पूर्व कुलपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा वन अनुसंधान शाखा द्वारा फाइकस की 87 प्रजातियों को एक स्थान पर रोपण कर फाइकस उद्यान स्थापित करने की सराहना की गयी। इसके तत्काल बाद डा० श्रीकान्त चन्दोला, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड द्वारा श्री एस०के० सिंह द्वारा लिखित फाइकस उद्यान नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। डा० एस०पी० सिंह द्वारा सुझाव दिया गया कि वन विभाग के कर्मचारियों द्वारा वन क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तन को काफी नजदीक से देखा एवं महसूस किया जाता है, किन्तु ऐसे प्रकरणों का अभिलेखीकरण नहीं किया जाता है। अभिलेखीकरण का कार्य शुरू किया जाना चाहिए।
7. डा० राजेश कौशल, वैज्ञानिक आई०आई०एस०डब्लू०सी० द्वारा Upscaling Research on Assessment of Productivity, Hydrological Behaviour, Resource Conservation and Intangible Benefits of Selected Commercial Bamboo species in Uttarakhand प्रोजेक्ट पर एक प्रस्तुतीकरण किया गया।
8. समिति के सभी सदस्यों द्वारा अनुसंधान शाखा में कार्यरत कर्मचारियों/अधिकारियों को विशेष वेतन जो मूल वेतन का न्यूनतम 15 प्रतिशत हो, देने हेतु सहमति व्यक्त की गयी। समिति द्वारा अनुसंधान कार्यों में विशेष रूचि एवं योगदान के लिए श्री डी०पी०लोहनी, वन क्षेत्राधिकारी, बीज रेंज एवं श्री राजेन्द्र सिंह बिष्ट, प्रभारी वन क्षेत्राधिकारी, लालकुआँ की प्रशंसा की गयी।
9. अनुसंधान सलाहकार समिति के पुनर्गठन पर चर्चा के दौरान मुख्य वन संरक्षक/सदस्य सचिव द्वारा सदन को अवगत कराया गया कि वर्तमान समिति का स्वरूप प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड के आदेश दिनांक 08-04-2010 के अनुसार है। इस समिति को सुदृढ़ एवं और अधिक वैधानिक बनाने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में अध्यक्ष महोदय द्वारा निर्देश दिये गये कि समिति के पुनर्गठन हेतु एक सुविचारित प्रस्ताव उपलब्ध कराया जाय, जिसमें अनुसंधान शाखा को वित्त पोषण करने वाली संस्थाओं को अवश्य शामिल किया जाय तथा समिति के सदस्यों के अधिकार एवं कर्तव्य, समिति का mandate, tenure, quorum इत्यादि का स्पष्ट समावेश किया जाय।
10. अंत में, प्रमुख वन संरक्षक/अध्यक्ष महोदय द्वारा अनुसंधान शाखा के कार्यों की प्रशंसा करते हुए निम्नानुसार अतिरिक्त सुझाव/निर्देश दिये गये –
  - (a) प्रदेश के अन्तर्गत विभिन्न संस्थानों द्वारा विभिन्न वानिकी विषयों पर शोध किये जा रहे हैं। ऐसे सभी संस्थानों द्वारा अपने शोधों के आदान-प्रदान के लिये एक Common Forum होना चाहिए, ताकि शोध के परिणामों को अंततः आमजनों तक पहुँचाया जा सके। अनुसंधान कार्य का उपयोग स्थानीय लोगों के जीविका सुधार हेतु भी किया जाय।
  - (b) अनुसंधान शाखा द्वारा जो शोध कार्य किये गये हैं तथा जिनमें अच्छे परिणाम आए हैं, उनकी झलक वन विभाग के क्रियाकलापों में दिखाई देना चाहिए। इसके लिये अनुसंधान शाखा द्वारा क्षेत्रीय वनाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित किया जाय।
  - (c) अनुसंधान शाखा के अन्तर्गत जिन अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा उत्कृष्ट एवं परिणामोमुखी कार्य किये जाते हैं, उन्हें चिन्हित कर यथोचित सम्मान किया जाना चाहिए।

- (d) वन शोध के अच्छे परिणामों को क्षेत्रीय प्रभागों की कार्य योजना/प्रबन्धन योजना में समावेश किया जाना चाहिए तथा ऐसे परिणामों को आगे बढ़ाने हेतु कार्ययोजना में संस्तुति की जानी चाहिए।
- (e) अनुसंधान शाखा को समय की माँग के अनुसार नये क्षेत्रों जैसे मानव-वन्यजीव संघर्ष न्यूनीकरण, जलवायु परिवर्तन आदि में शोध करने चाहिए तथा शोध का प्रत्येक विषय Need-based होना चाहिए तथा कोई अनुसंधान शुरू करने से पहले उसके उपयोगिता का आकलन अवश्य कर लेना चाहिए।

अन्त में सहायक वन वर्धनिक, साल क्षेत्र, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी द्वारा अध्यक्ष महोदय एवं सभी सदस्यों/प्रतिनिधियों/विशेष आमंत्रियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया एवं मा० अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक समाप्त की गयी।

अनुमोदित

( डा० श्रीकान्त बन्दीला )

प्रमुख वन संरक्षक,  
उत्तराखण्ड, देहरादून  
अध्यक्ष, उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद

Shawani  
11/9/15

( बी० पी० गुप्ता )

मुख्य वन संरक्षक,  
जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी  
सदस्य-सचिव, उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान सलाहकार परिषद

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी  
कार्यालय मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी

दूरभाष : 05946-234047, फ़ैक्स: 05946-235136 ई-मेल ccfresearch@rediffmail.com

पत्रांक- 97 /6-31

दिनांक, हल्द्वानी 01-09-2015

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

- 1- प्रमुख सचिव, वन एवं पर्यावरण, उत्तराखण्ड शासन, देहरादून।
- 2- प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 3- प्रमुख वन संरक्षक, ग्राम वन पंचायत एवं संयुक्त वन प्रबन्ध, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी।
- 4- प्रमुख वन संरक्षक, परियोजनाएं, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 5- प्रमुख वन संरक्षक, वन्य जीव, उत्तराखण्ड, नैनीताल।
- 6- प्रबन्ध निदेशक, उत्तराखण्ड वन विकास निगम, देहरादून।
- 7- अपर प्रमुख वन संरक्षक, वन अनुसंधान, प्रबन्धन एवं प्रशिक्षण, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी।
- 8- अपर प्रमुख वन संरक्षक, नियोजन एवं वित्तीय प्रबन्धन, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 9- मुख्य वन संरक्षक, कार्ययोजना, हल्द्वानी।
- 10- मुख्य वन संरक्षक/ मुख्य कार्यकारी अधिकारी, उत्तराखण्ड कैम्पा, देहरादून।
- 11- मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जायका परियोजना, देहरादून।
- 12- डा० राकेश शाह, अध्यक्ष, उत्तराखण्ड जैव विविधता बोर्ड, देहरादून।
- 13- डा० बी० एस० बरफाल, सेवानिवृत्त, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 14- निदेशक, पं०जी०बी०पंत इन्स्टीट्यूट ऑफ हिमालयन इन्वायरमेंट एण्ड डेवलपमेन्ट, अल्मोड़ा।
- 15- निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून।
- 16- निदेशक, भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून।
- 17- निदेशक, वि०प०कृ०अ० संस्थान, अल्मोड़ा।
- 18- निदेशक, जड़ी बूटी शोध एवं विकास संस्थान, गोपेश्वर, चमोली।
- 19- निदेशक, यूकास्ट, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 20- कुलपति, पं०गो०ब०पं० कृषि वि०वि०, पंतनगर।
- 21- डॉ० जे०एस० मेहता, से०नि० वनाधिकारी, अल्मोड़ा।
- 22- श्री आई०डी० पाण्डे, सेवानिवृत्त प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी।
- 23- श्री प्रकाश भटनागर, सेवानिवृत्त प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, हल्द्वानी।
- 24- श्री एस० के० सिंह, सेवानिवृत्त मुख्य वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 25- डॉ० एस०पी० सिंह, आई०एन०एस०ए० वैज्ञानिक, नैनीताल।
- 26- प्रभारी वैज्ञानिक, कैप, सेलाकुई, देहरादून।
- 27- डॉ० राजेन्द्र कौशल, भारतीय भूमि एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून।
- 28- वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी।
- 29- वन वर्धनिक, साल, हल्द्वानी।
- 30- वन वर्धनिक, पर्वतीय, नैनीताल।
- 31- गार्ड फाइल।

*Bhawani*  
(बी०पी०गुप्ता) 11/9/15

मुख्य वन संरक्षक,  
जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान,  
हल्द्वानी/सदस्य सचिव, वानिकी अनुसंधान  
सलाहकार परिषद, उत्तराखण्ड।

## उपस्थित सदस्यों की सूची

क्र० सं०	अधिकारी का नाम	पदनाम	मोबाईल नम्बर	ई-मेल पता
1	डा० श्रीकान्त चन्दोला	प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड।	9412054439	s_chandola2002@yahoo.com
2	श्री जय राज	प्रमुख वन संरक्षक, वन अनुसंधान प्रशिक्षण एवं प्रबन्धन, हल्द्वानी	9412053604	ccfpfmua@gmail.com
3	श्री ए०आर० सिन्हा	अपर प्रमुख वन संरक्षक, कार्ययोजना, उत्तराखण्ड।	9412086310	amulyasinha@yahoo.co.uk
4	श्री बी०पी० गुप्ता	मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी।	9412057475	ccfresearch@rediffmail.com
5	डा० राजेन्द्र सिंह	मुख्य वन संरक्षक, कुमाऊँ, नैनीताल	9458192126	rsbisht@hotmail.co.uk
6	श्री सुरेन्द्र मेहरा	वन संरक्षक, पश्चिमी वृत्त।	9458162276	surenmehra@gmail.com
7	श्री सन्तोष विजय शर्मा	वन संरक्षक, दक्षिणी कुमाऊँ, नैनीताल।	9458192128	santosh.v.1959@gmail.com
8	श्री सोबरन लाल	वन संरक्षक, वन पंचायत	9412030909	pccfvanpanchayat@gmail.com
9	डा० एस०के० नन्दी	जी०बी०पी०आई०एच०ई०डी०, कोसी कटारमल, अल्मोडा	9411703555	shyamal_dandi@rediffmail.com
10	डा०जे०एम०एस० तोमर	आई०आई०एस०डब्लू०सी०218, कालागढ़, देहरादून।	9410189222	jmstomer@gmail.com
11	डा० सलील तिवारी	संयुक्त निदेशक, कृषि वानिकी प्रभारी, पन्तनगर विश्व विद्यालय	7500241465	saliitewari@gmail.com
12	डा० राजेन्द्र कौशल	Indian Institute of Soil & Water Conservation Deheradun	9412439282	kaushalrajesh@gmail.com
13	श्री आई०डी० पाण्डे	सेवानिवृत्त, प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड	9831378398	idpande@yahoo.com
14	डा० सी०के० कविदयाल	प्रभारी वनाधिकारी, तराई पश्चिमी वन प्रभाग, रामनगर।	9412085441	cr4514@yahoo.co.in
15	डा० पराग मधुकर धकाते	प्रभारी वनाधिकारी, तराई पूर्वी वन प्रभाग, हल्द्वानी।	9997105767	paragenetics@gmail.com
16	डा० सी०एस० सनवाल	प्रभागीय वनाधिकारी, हल्द्वानी वन प्रभाग, हल्द्वानी।	7579009817	chandra.sanwal@gmail.com
17	श्री सनातन	प्रभागीय वनाधिकारी, तराई केन्द्रीय वन प्रभाग।	9412030430	sa_naten@hotmail.com
18	डा० जे०एस० मेहता	सेवानिवृत्त, वनाधिकारी, उत्तराखण्ड।	9412092511	jsmehtakailashi@gmail.com
19	श्री एस० पी० सिंह	INSA Scientist Nainital	09758765300	
20	श्री प्रकाश भटनागर	सेवानिवृत्त, वनाधिकारी, उत्तराखण्ड।	9412084272	mrroj4@gmail.com
21	श्री एस० के० सिंह	सेवानिवृत्त, वनाधिकारी, उत्तराखण्ड।	9412076135	sksingh2015@yahoo.com
22	श्री पी०के० भट्ट	वन वर्धनिक, साल क्षेत्र, उत्तराखण्ड हल्द्वानी।	9458192185	van_vardhnksal@rediffmail
23	श्री डी०टी०जी० सम्बन्धम	वन वर्धनिक, पर्वतीय नैनीताल।	8937919999	thiruifs@gmail.com
24	श्री आर० के० तिवारी	सहायक वन वर्धनिक, साल क्षेत्र, उत्तराखण्ड हल्द्वानी।	9927574387	rkt_sdo@rediffmail.com
25	श्री डी० एस० मर्तोलिया	सहायक वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड नैनीताल।	9412087304	dhrubsm@yahoo.in
26	श्री डी० के० पाण्डे	प्रभारी सहायक वन संरक्षक, साल क्षेत्र, उत्तराखण्ड हल्द्वानी।	9837650416	d.k.pandey22@gmail.com
27	वनक्षेत्राधिकारीगण एवं	अन्य अधिकारीगण		